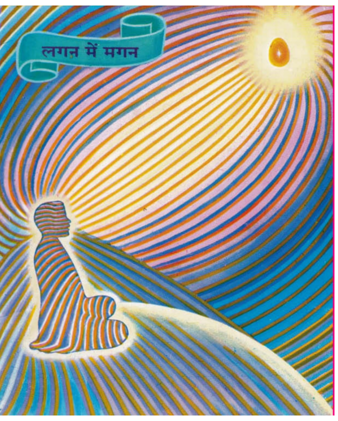

06-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - जितना समय मिले एकान्त में जाकर याद की यात्रा करो, जब तुम मंजिल पर पहुँच जायेंगे तब यह यात्रा पूरी हो जायेगी"

आपको खा जाऊ मीठे बाबा....

प्रश्नः-संगम पर बाप अपने बच्चों में कौन-सा ऐसा गुण भर देते हैं, जो आधाकल्प तक चलता रहता है?

उत्तर:- बाप कहते - जैसे मैं अति स्वीट हूँ, ऐसे बच्चों को भी स्वीट बना देता हूँ। देवतायें बहुत स्वीट हैं। तुम बच्चे अभी स्वीट बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। जो बहुतों का कल्याण करते हैं, जिनमें कोई शैतानी ख्यालात नहीं हैं, वही स्वीट हैं। उन्हें ही ऊंच पद प्राप्त होता है। उनकी ही फिर पूजा होती है।

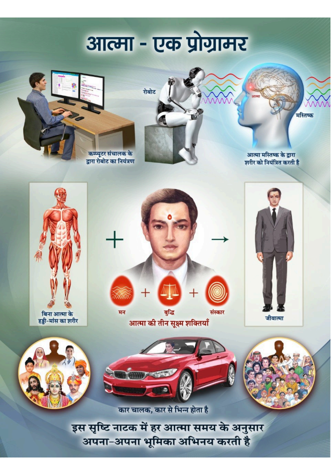

ओम् शान्ति। बाप बैठ समझाते हैं इस शरीर का मालिक है आत्मा। यह पहले समझना चाहिए क्योंकि अभी बच्चों को ज्ञान मिला है। पहले-पहले तो समझना है हम आत्मा हैं। शरीर से आत्मा काम लेती है, पार्ट बजाती है। ऐसे-ऐसे ख्यालात और

कोई मनुष्य को आते नहीं क्योंकि देह-अभिमान में हैं। यहाँ इस ख्याल में बिठाया जाता है - मैं आत्मा हूँ। यह मेरा शरीर है। मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। यह याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाती है। यह पहले पूरी याद करनी चाहिए।

यात्रा पर जब जाते हैं तो कहते हैं चलते रहो। तुमको भी याद की यात्रा पर चलते रहना है, यानी याद करना है। याद नहीं करते, गोया यात्रा पर नहीं चलते। देह-अभिमान आता है। देह-अभिमान से कुछ न कुछ विकर्म बन जाता है। ऐसे भी नहीं मनुष्य सदैव विकर्म करते हैं। फिर भी कमाई तो बन्द हो जाती है ना इसलिए जितना हो सके याद की यात्रा में ढीला नहीं पड़ना चाहिए। एकान्त में बैठ अपने साथ विचार सागर मंथन कर प्वाइंट्स निकालनी होती हैं। कितना समय बाबा की याद में रहते हैं, मीठी चीज़ की याद पड़ती है ना।

Subtle Point to Understand

बच्चों को समझाया है, इस समय सभी मनुष्य मात्र एक-दो को नुकसान ही पहुंचाते हैं। सिर्फ टीचर

की महिमा बाबा करते हैं, उनमें कोई-कोई टीचर खराब होते हैं, नहीं तो टीचर माना टीच करने वाला, मैनर्स सिखलाने वाला। जो रिलीजस माइन्डेड, अच्छे स्वभाव के होते हैं, उनकी चलन भी अच्छी होती है। बाप अगर शराब आदि पीते हैं तो बच्चों को भी वह संग लग जाता है। इसको कहेंगे खराब संग क्योंकि रावण राज्य है ना। रामराज्य था जरूर परन्तु वह कैसे था, कैसे स्थापन हुआ, यह वन्डरफुल मीठी बातें तुम बच्चे ही जानते हो। स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट कहा जाता है ना। बाप की याद में रहकर ही तुम पवित्र बन और पवित्र बनाते हो। बाप नई सृष्टि में नहीं आते हैं। सृष्टि में मनुष्य, जानवर, खेती-बाड़ी आदि सब होता है। मनुष्य के लिए सब कुछ चाहिए ना। शास्त्रों में प्रलय का वृतान्त भी रांग है। प्रलय होती ही नहीं। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। बच्चों को आदि से अन्त तक ख्याल में रखना है। मनुष्यों को तो अनेक प्रकार के चित्र याद आते हैं। मेले मलाखड़े याद आते हैं। वह सभी हैं हद के, तुम्हारी है बेहद की याद, बेहद की खुशी, बेहद का धन। बेहद का

बाप है ना। हद के बाप से सब हद का मिलता है। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। सुख होता ही है धन से। धन तो वहाँ अपार है। सब कुछ सतोप्रधान है वहाँ। तुम्हारी बुद्धि में है, हम सतोप्रधान थे फिर बनना है। यह भी तुम अभी जानते हो, तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं - स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट हैं ना। बाबा से भी स्वीट होने वाले हैं। वही ऊंच पद पायेंगे। स्वीटेस्ट वह हैं जो बहुतों का कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है ना, तब तो सब उनको याद करते हैं। कोई शहद या चीनी को ही स्वीटेस्ट नहीं कहा जाता। यह मनुष्य की चलन पर कहा जाता है। कहते हैं ना यह स्वीट चाइल्ड (मीठा बच्चा) है। सतयुग में कोई भी शैतानी बात नहीं होती। इतना ऊंच पद जो पाते हैं, जरूर यहाँ पुरुषार्थ किया है।

How Humble my shivbaba is...!

Definition of..

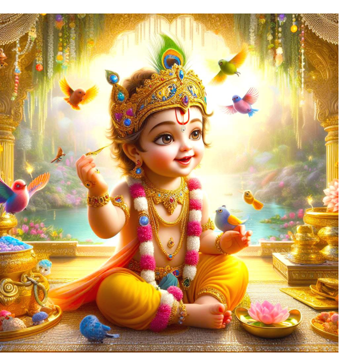

तुम अभी नई दुनिया को जानते हो। तुम्हारे लिए तो जैसे कल नई दुनिया सुखधाम होगी। मनुष्यों को पता ही नहीं - शान्ति कब थी। कहते हैं विश्व में शान्ति हो। तुम बच्चे जानते हो - विश्व में शान्ति थी

But, we Know it, How Lucky & Great we all are...!

जो अभी फिर स्थापन कर रहे हो। अब यह सभी को समझायें कैसे? ऐसी-ऐसी प्वाइंट्स निकालनी चाहिए, जिसकी बहुत चाहना है मनुष्यों को। विश्व में शान्ति हो, इसके लिए रड़ी मारते रहते हैं क्योंकि अशान्ति बहुत है। यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र सामने देना है। इनका जब राज्य था तो विश्व में शान्ति थी, उनको ही हेविन डीटी वर्ल्ड कहते हैं। वहाँ विश्व में शान्ति थी। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले की बातें और कोई नहीं जानते। यह है मुख्य बात। सब आत्मायें मिलकर कहती हैं विश्व में शान्ति कैसे हो? सभी आत्मायें पुकारती हैं, तुम यहाँ विश्व में शान्ति स्थापन करने का पुरुषार्थ कर रहे हो। जो विश्व में शान्ति चाहते हैं उन्हें तुम सुनाओ कि भारत में ही शान्ति थी। जब भारत स्वर्ग था तो शान्ति थी, अब नर्क है। नर्क (कलियुग) में अशान्ति है क्योंकि धर्म अनेक हैं, माया का राज्य है। भक्ति का भी पाम्प है। दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है। मनुष्य भी मेले मलाखड़े आदि पर जाते हैं, समझते हैं जरूर कुछ सच होगा। अभी तुम समझते हो उनसे कोई पावन नहीं

Example :-

Mind Very Well...

06-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Old Delhi

बन सकते हैं। पावन बनने का रास्ता मनुष्य कोई बता न सकें। पतित-पावन एक ही बाप है। दुनिया एक ही है, सिर्फ नई और पुरानी कहा जाता है। नई दुनिया में नया भारत, नई देहली कहते हैं। नई होनी है, जिसमें फिर नया राज्य होगा। यहाँ पुरानी दुनिया में पुराना राज्य है। पुरानी और नई दुनिया किसको कहा जाता है, यह भी तुम जानते हो। भक्ति का कितना बड़ा प्रस्ताव है। इसको कहा जाता है अज्ञान। ज्ञान सागर एक बाप है। बाप तुमको ऐसे नहीं कहते कि राम-राम कहो वा कुछ करो। नहीं, बच्चों को समझाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। यह एज्युकेशन तुम पढ़ रहे हो। इसका नाम ही है रूहानी एज्युकेशन। स्प्रीचुअल नॉलेज। इनका अर्थ भी कोई नहीं जानते। ज्ञान सागर तो एक ही बाप को कहा जाता है। वह है - स्प्रीचुअल नॉलेजफुल फादर। बाप रूहों से बात करते हैं। तुम बच्चे समझते हो रूहानी बाप पढ़ाते हैं। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। रूहानी नॉलेज को ही स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है।

New Delhi

How Lucky we all are....!

बाप ही पूछ सकते हैं कि आगे कब मिले हो? और कोई को पूछने का अक्ल आयेगा ही नहीं। बाप कहते हैं मुझे भी फिर से गीता सुनाने आना पड़े। आकर रावण की जेल से छुड़ाना पड़े।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

06-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

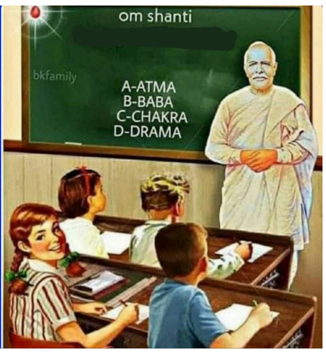

तुम बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा बिन्दी है, वह हमको पढ़ाते हैं। हम आत्मायें पढ़ रही हैं। यह भूलना नहीं चाहिए। हम आत्मा को जो नॉलेज मिलती है, फिर हम दूसरी आत्माओं को देते हैं। यह याद तब ठहरेगी जब अपने को आत्मा समझ बाप की याद में रहेंगे। याद में बहुत कच्चे हैं, झट देह-अभिमान आ जाता है। देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। हम आत्मा इनको सौदा देते हैं। हम आत्मा व्यापार करते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में ही फायदा है। आत्मा को ज्ञान है हम यात्रा पर हैं। कर्म तो करना ही है। बच्चों आदि को भी सम्भालना है। धंधा धोरी भी करना है। धन्धे आदि में याद रहे हम आत्मा हैं, यह बड़ा मुश्किल है। बाप कहते हैं कोई भी उल्टा काम कभी नहीं करना। सबसे बड़ा पाप है विकार का। वही बड़ा तंग करने वाला है। अभी तुम बच्चे पावन बनने की प्रतिज्ञा करते हो। उसका ही यादगार यह राखी बंधन है। आगे तो पाई पैसे की राखी मिलती थी। ब्राह्मण लोग जाकर राखी बांधते थे। आजकल तो राखी भी कितनी फेशनेबुल बनाते

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...
क्यों नही मानेंगे मेरे बाबा...

most imp to understand

हैं। वास्तव में है अभी की बात। तुम बाप से प्रतिज्ञा करते हो - "हम कभी विकार में नहीं जायेंगे। आप से विश्व के मालिक बनने का वर्सा लेंगे"। बाप कहेंगे 63 जन्म तो विषय वैतरणी नदी में गोते खाये अब तुमको क्षीर सागर में ले चलते हैं। सागर कोई है नहीं। भेंट में कहा जाता है। तुमको शिवालय में ले जाते हैं। वहाँ अथाह सुख है। अभी यह अन्तिम जन्म है, हे आत्मायें पवित्र बनो। क्या बाप का कहना नहीं मानेंगे। ईश्वर तुम्हारा बाप कहते हैं मीठे बच्चे विकार में नहीं जाओ। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं, वह मुझे याद करने से ही भस्म होंगे। कल्प पहले भी तुमको शिक्षा दी थी। बाप गैरन्टी तब करते हैं जब तुम यह गैरन्टी करते हो कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगे। इतना याद करते रहो जो शरीर का भान न रहे। संयासियों में भी कोई-कोई तीखे बहुत पक्के ब्रह्म ज्ञानी होते हैं, वह भी ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ते हैं। यहाँ तुमको तो बाप समझाते हैं, पावन बनकर जाना है। वह तो अपनी मत पर चलते हैं। ऐसे नहीं कि वह शरीर छोड़कर कोई मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाते हैं। नहीं।

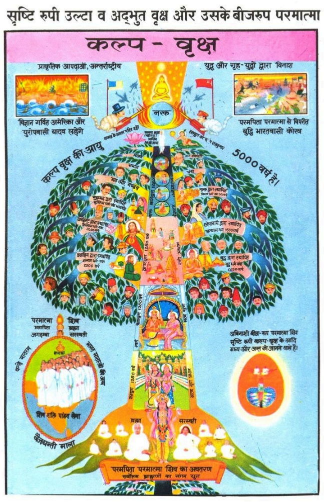

आते फिर भी यहाँ ही हैं परन्तु उनके फालोअर्स समझते हैं कि वह निर्वाण गया। बाप समझाते हैं - एक भी वापिस नहीं जा सकता, कायदा ही नहीं। झाड़ वृद्धि को जरूर पाना है।

ये पक्का समझ लो

वाह रे मैं...!

अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो, और सब मनुष्य हैं कलियुग में। तुम दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। जो तुम्हारे धर्म के होंगे वह आते जायेंगे। देवी-देवताओं का भी वहाँ सिजरा है ना। यहाँ बदली होकर और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं, फिर निकल आयेंगे। नहीं तो वहाँ जगह कौन भरेंगे। जरूर वह अपनी जगह भरने फिर आ जायेंगे। यह बहुत महीन बातें हैं। बहुत अच्छे-अच्छे भी आयेंगे जो दूसरे धर्म में कनवर्ट हो गये हैं तो फिर अपनी जगह पर आ जायेंगे। तुम्हारे पास मुसलमान आदि भी आते हैं ना। बड़ी खबरदारी रखनी पड़ती है, झट जांच करेंगे, यहाँ दूसरे धर्म वाले कैसे जाते हैं? इमरजेन्सी में तो बहुतों को पकड़ते हैं फिर पैसे मिलने से छोड़ भी देते हैं। जो कल्प पहले हुआ है, तुम अभी देख रहे हो। कल्प आगे भी ऐसा हुआ

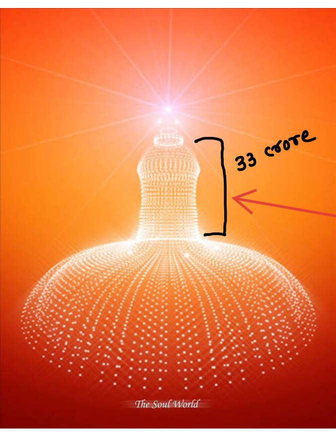

Most imp.

Point to ponder deeply

imp to understand

Nothing New

था। तुम अभी मनुष्य से देवता उत्तम पुरुष बनते हो। यह है सर्वोत्तम ब्राह्मणों का कुल। इस समय बाप और बच्चे रूहानी सेवा पर हैं। कोई गरीब को धनवान बनाना - यह रूहानी सेवा है। बाप कल्याण करते हैं तो बच्चों को भी मदद करनी चाहिए। जो बहुतों को रास्ता बताते हैं वह बहुत ऊंच चढ़ सकते हैं। तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है लेकिन चिंता नहीं, क्योंकि तुम्हारी रेसपान्सिबिलिटी बाप के ऊपर है। पुरुषार्थ जोर से कराया जाता है फिर जो फल निकलता है, समझा जाता है कल्प पहले मिसल। बाप बच्चों को कहते हैं - बच्चे, फिक्र मत करो। सेवा में मेहनत करो। नहीं बनते तो क्या करेंगे! इस कुल का नहीं होगा तो तुम भल कितना भी माथा मारो, कोई कम तुम्हारा माथा खपायेंगे, कोई जास्ती। बाबा ने कहा है जब दु:ख बहुत आता जायेगा तो फिर आयेंगे। तुम्हारा व्यर्थ कुछ नहीं जायेगा। तुम्हारा काम है राइट बताना। शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। ऐसे बहुत कहते हैं भगवान जरूर है। महाभारत लड़ाई

Point to be Noted

Attention ✓
Tension X

most
imp to understand

बिनय न मानत जलधि जड़
गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब
भय बिनु होइ न प्रीति॥
(सुंदरकांड/ 57)

भावार्थ: तीन दिन बीत गए, किंतु जड़ समुद्र विनती मानने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब श्रीराम जी क्रोध सहित बोले- बिना भय के प्रीति नहीं होती!

समजा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

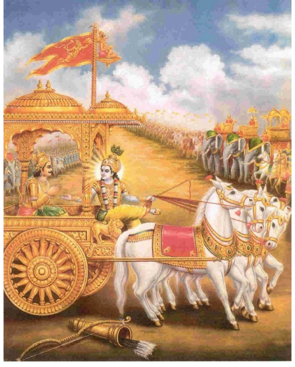

Coming Soon...

के समय भगवान था। सिर्फ कौन-सा भगवान था, उसमें मूँझ गये हैं। श्रीकृष्ण तो हो न सके। श्रीकृष्ण उसी फीचर्स से फिर सतयुग में ही होगा। हर जन्म में फीचर्स बदलते जाते हैं। सृष्टि अब बदल रही है। पुराने को नया अब भगवान कैसे बनाते हैं, वह भी कोई नहीं जानते। तुम्हारा आखिर नाम निकलेगा। स्थापना हो रही है फिर यह राज्य करेंगे, विनाश भी होगा। एक तरफ नई दुनिया, एक तरफ पुरानी दुनिया - यह चित्र बड़ा अच्छा है। कहते भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश.... परन्तु समझते कुछ नहीं। मुख्य चित्र है त्रिमूर्ति का। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। तुम जानते हो - शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको याद की यात्रा सिखला रहे हैं। बाबा को याद करो, योग अक्षर डिफीकल्ट लगता है। याद अक्षर बहुत सहज है। बाबा अक्षर बहुत लवली है। तुमको खुद ही लज्जा आयेगी - हम आत्मायें बाप को याद नहीं कर सकती हैं, जिनसे विश्व की बादशाही मिलती है! आपेही लज्जा आयेगी। बाप भी कहेंगे तुम तो बेसमझ हो, बाप को याद नहीं कर सकते हो तो

06-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वर्सा कैसे पायेंगे! विकर्म विनाश कैसे होंगे! तुम आत्मा हो मैं तुम्हारा परमपिता परमात्मा अविनाशी हूँ ना। तुम चाहते हो हम पावन बन सुखधाम में जायें तो श्रीमत पर चलो। मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे! अच्छा!

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

पूछो अपने आप से...

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

There are only Two ways to become Pure...
चाहे प्यार से .. (યોગબળ)
चाहे मार से.. (સજા બળ)

Choice is All yours

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) हर प्रकार से पुरुषार्थ करना है, फिक्र (चिंता) नहीं क्योंकि हमारा रेसपान्सिबुल स्वयं बाप है। हमारा कुछ भी व्यर्थ नहीं जा सकता।

2 बाप समान बहुत-बहुत स्वीट बनना है। अनेकों का कल्याण करना है। इस अन्तिम जन्म में पवित्र जरूर बनना है। धंधा आदि करते अभ्यास करना है कि मैं आत्मा हूँ।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

06-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-प्रवृत्ति के विस्तार में रहते फरिश्ते पन का साक्षात्कार कराने वाले साक्षात्कार मूर्त भव

प्रवृत्ति का विस्तार होते हुए भी विस्तार को समेटने और उपराम रहने का अभ्यास करो।

अभी-अभी स्थूल कार्य कर रहे हैं, अभी-अभी अशरीरी हो गये - यह अभ्यास फरिश्ते पन का साक्षात्कार करायेगा।

ऊंची स्थिति में रहने से

Advantages

(1) छोटी-छोटी बातें व्यक्त भाव की अनुभव होंगी। ऊंचा जाने से (2) नीचापन आपेही छूट जायेगा। (3) मेहनत से बच जायेंगे। (4) समय भी बचेगा, सेवा भी फास्ट होगी। (5) बुद्धि इतनी विशाल हो जायेगी जो एक समय पर कई कार्य कर सकती है।

Multi-Tasking

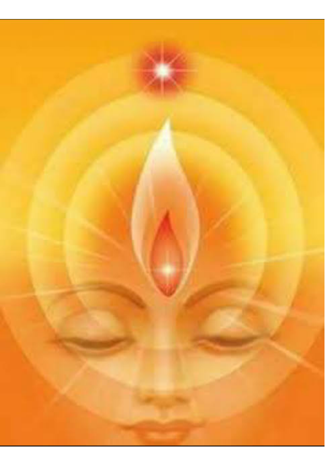

स्लोगन:- खुशी को कायम रखने के लिए आत्मा रूपी दीपक में ज्ञान का घृत रोज़ डालते रहो।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो - मेरे हो।

ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो, दिल से कहो "बाबा जो हो वह सब आप ही हो।" कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ।

श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम बाप ने आप बच्चों के हाथ में दी है, आप जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो।

फाइनल पेपर

इस बार बाप-दादा रिजल्ट लेने के लिए आए हैं। जब पेपर अर्थात् इम्तहान के दिन होते हैं तो उस समय पढ़ाई पढ़ायी नहीं जाती है, लेकिन पढ़े हुए का इम्तहान होता है। तो बाप-दादा ने भी संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा पढ़ाई बहुत पढ़ायी है, अब उसकी रिजल्ट देखेंगे। हरेक अपनी रिजल्ट से संतुष्ट हैं? चैक किया है कि समय प्रमाण वा बाप की पढ़ाई प्रमाण, विश्व के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनाया है? कोई भी बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रमाण दिए जाते हैं। लेकिन सभी प्रमाण में श्रेष्ठ प्रमाण, 'प्रत्यक्ष प्रमाण' ही है। तो ऐसे बने हो? जो कोई भी देखे तो अनुभव करे कि इन्हें पढ़ाने वाला वा बनाने वाला सर्वशक्तिवान बाप है। प्रत्यक्ष प्रमाण ही बाप को प्रत्यक्ष करने का सहज और श्रेष्ठ साधन है। इस साधन को अपनाया है? प्रत्यक्षता वर्ष तो मनाया लेकिन स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनाया? सहज है वा मुश्किल है? क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् जो हो, जिसके हो उसी स्मृति में रहना। वह मुश्किल होता है? अपने आपको याद करना किसको मुश्किल लगता है? टेम्प्रेरी? (अस्थायी) पार्ट बजाने के समय अपना टेम्प्रेरी टाईम का स्मृति में रखना मुश्किल होता है। जैसे कोई फीमेल से मेल बनेगा तो फिर भी पार्ट बजाते-बजाते फीमेल का रूप कब स्मृति में आ जायेगा। लेकिन निजी स्वरूप कब भूलता नहीं है। तो आप जो हो, जिसके हो और जहाँ के हो वह अनादि निजी स्वरूप, अनादि बाप, अनादि स्थान है, न कि टेम्प्रेरी। अनादि की स्मृति सहज होती है वा मुश्किल? प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् अनादि रूप में स्थित रहना। फिर भी भूल जाते हो? वास्तव में भूलना मुश्किल होना चाहिए। क्योंकि

भूलकर जो स्वरूप स्मृति में लाते हो वह अनादि नहीं, मध्यकाल का है। मध्यकाल अर्थात् द्वापर का समय, तो मध्यकाल का स्वरूप मुश्किल याद आता है। यह यथार्थ नहीं लेकिन अयथार्थ है।

बाप-दादा रिजल्ट लेने आये हैं, खास पुरानों से। जिन्होंने विशेष उल्हनों द्वारा आह्वान किया है। पुरानों का आह्वान करना अर्थात् रिजल्ट देने के लिए तैयार रहना। क्योंकि बाप-दादा ने पहले ही कह दिया था। जैसे नयों को सुनाते हो, बाप का आना अपने आपको जीते जी मरने का साहस रखना। क्योंकि बाप का आना अर्थात् वापस ले जाना वा पुरानी दुनिया का परिवर्तन करना। वैसे ही आपको बाप का बुलाना अर्थात् रिजल्ट देने के लिए तैयार रहना। तो पेपर के लिए तैयार हो ना? विश्व को परिवर्तन करने की हलचल देखते हुए अचल हो? स्वयं को हलचल कराने वाले निमित्त समझते हो वा अब तक अपने ही हलचल में हो? बाप-दादा हिलाने के पेपर लेवे? अचल रहेंगे वा डगमग होंगे? रेडी हो या एवररेडी (सदा तैयार) हो? रिजल्ट क्या है? स्वयं के संस्कारों के पेपर, स्वयं के व्यर्थ संकल्पों के पेपर वा कोई न कोई शक्ति की कमी के कारण पेपर, सर्व से संस्कार मिलाने के पेपर, अब तक इन छोटे-छोटे हद के पेपर में भी हलचल में आते हो वा अचल

पेपर, अब तक इन छोटे-छोटे हद के पेपर में भी हलचल में आते हो वा अचल हो? बेहद के पेपर अर्थात् अनादि तत्वों द्वारा पेपर, बेहद के विश्व के हलचल द्वारा पेपर, बेहद के वातावरण द्वारा पेपर, बेहद सृष्टि के तमोप्रधान अशुद्ध वायब्रेशन वायुमण्डल द्वारा पेपर। ऐसे बेहद के पेपर देने के लिए पहले है - 'स्वयं द्वारा स्वयं का पेपर', छोटे से ब्राह्मण संसार द्वारा वा ब्राह्मणों के संस्कारों द्वारा आया हुआ पेपर, यह कच्चा इम्तहान है वा पक्का इम्तहान है? जैसे छः मास का और बारह मास का पक्का इम्तहान होता है ना! तो हद का पेपर दे पास हो गये हो? अभी बेहद का पेपर शुरू हो? इसी तरह अपने आपको चैक करो कि - किसी भी सब्जेक्ट के पेपर में पास मार्कस (नम्बर) लेने योग्य बने हैं वा पास विद् ऑनर (सम्मान सहित पास) बने हैं। समझा, क्या करना है? घबराते बहुत हो और घबराते किससे हो? छोटे-छोटे माया के बुदबुदों से। जो अभी-अभी हैं, अभी-अभी नहीं होंगे। छोटे

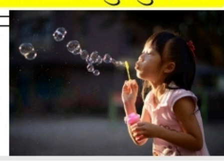

बच्चे भी बुदबुदों से नहीं डरते हैं। खेलते हैं न कि डरते हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान बुदबुदों से खेलने वाले हैं न कि डरने वाले। अच्छा फिर आगे सुनाते रहेंगे।

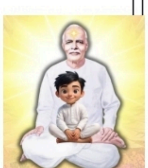

चल नहीं रहे हैं लेकिन कोई चला रहा है। अपनी गोदी में बिठाकर चला रहे हैं, तो मुश्किल थोड़े ही होगा! जैसे बच्चा अगर बाप की गोदी में घूमता है तो उसको कब थकावट नहीं होगी, मजा आयेगा। अपने पांव से चले तो थकेगा भी, रोयेगा भी, चिल्लायेगा भी। यह तो बाप चलाने वाला चला रहा है। बाप की गोदी में बैठे हुए चल रहे हैं। कितना अति इन्द्रिय सुख व आनन्द का अनुभव होता है! जरा भी मेहनत वा मुश्किल का अनुभव नहीं। प्राप्ति है वा मेहनत है? संगमयुगी सदा साथी बनने वाली आत्माओं को मेहनत क्या होती है, वह 'अविद्या मात्रम्' होते हैं। ऐसे बहुत थोड़े होंगे जिन्हों को मेहनत अविद्या मात्रम् होगी। यह है फाईनल स्टेज की निशानी। उसके समीप आ रहे हैं। पुरुषार्थ भी एक नेचुरल कर्म हो जाए। जैसे और कर्म नैचुरल है ना। उठना, बैठना, चलना, सोना नैचुरल कर्म हैं, वैसे स्वयं को सम्पन्न बनाने का पुरुषार्थ भी नैचुरल कर्म अनुभव हो तब इस नेचर को परिवर्तन कर सकेंगे। अभी तो वह सर्विस रही हुई है। अभी आप सब जा रहे हो, सभी को फाईनल पेपर देने लिए तैयार करने। क्योंकि आप सब निमित्त हो ना। ऐसे एवररेडी बन जाओ जो कोई भी छोटी वा बड़ी परीक्षा में अचल रहे। अभी तो छोटे पेपर में हलचल में आ जाते हैं। स्वयं के पेपर्स द्वारा ही हलचल में हैं। तो अब ऐसी तैयारी कर भेजना जो पुराने यहाँ आवें तो एवररेडी दिखाई पड़े। बाप-दादा ने रियलाइजेशन कोर्स दिया है तो उसकी रिजल्ट भी लेंगे। अनुभवी बनाते जाओ। उच्चारण करने वाले बन जाते हैं लेकिन अनुभवी कम बनते हैं। अगर अनुभवी मूर्त्त बन जाए तो अनुभवी कब धोखा नहीं खायेंगे। धोखा खाना अर्थात् अनुभवी नहीं। ऐसा ही लक्ष्य रख करके सभी में ऐसे लक्षण भरते जाओ। यह रिजल्ट देख लेंगे। अभी तो यही उमंग सर्व का होना चाहिए कि 'सम्पन्न बन विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करेंगे'। नहीं तो विश्व परिवर्तन का कार्य भी हलचल में है। अभी-अभी बादल भरते हैं, थोड़ा बरसते हैं - फिर बिखर जाते हैं। कारण? स्थापना करने

वाले विश्व परिवर्तक ही हिलते रहते हैं। अपने निशाने से बिखर जाते हैं तो परिवर्तन के बादल भी बिखर जाते हैं। गरजते हैं लेकिन बरसते नहीं।

05/08/25

(14.04.1977)